आपका आमंत्रण

मार्च – अप्रैल 2021
अंक द्वितीय

1 करोड़ मजदूर पैदल घर गए

काला पानी 2020

आज़ाद भारत की सबसे दर्दनाक यात्रा पर विशेषांक

यात्रा आमंत्रण

संपादकीय बोर्ड

बिस्वदीप रॉय चौधरी
मुख्य संपादक

मो. इस्माईल
परामर्श संपादक

विकाश पटेल
मुम्बई

अन्जुम
विशेश संवाददाता
इलाहबाद

प्रताप सिंह चंदेल
ब्युरो प्रमुख/कानूनी सलाहकार

विरेन्द्र सिंह
संवाददाता
उत्तर प्रदेश

सुहासिनी साकिर
संवाददाता
मुम्बई

कपिल आत्तरी
कॉपी (अनुकृति) संपादक

मुख्य संपादक

बिस्वदीप रॉय चौधरी

संपादक की कलम से

कोरोना महामारी है या नहीं यह विवाद का विषय हो सकता है पर ऐसे समय रोज की कमाई पर जिन्दा लोगों के लिए गंभीर परिस्थिति उत्पन्न हो जाती है यह शाश्वत सत्य है, हुकमरानों को फैसला लेने की कितनी जल्दी है यह तालाबंदी ने देखा जब चार घंटे में आपातकाल लगा दिया जाता है और देश ने यह भी देखा की सरकार कितनी असंवेदनहीन हो जाती है जब एक गरीब भूख से मर रहा होता है। दरसअल जो सरकारी तंत्र है वह कभी भी आम जनमानस की व्यथा से सरोकार रखा ही नहीं। विभाजन के बाद कोरोना काल में मजदूरों का सबसे बड़ा विस्थापन देश ने देखा और शर्मसार भी होना पड़ा। यात्रा आमंत्रण के इस अंक में हम इसी दुःखद और बेहद अमानवीय यात्रा को आपके आगे रखेंगे और जिन्हें आपने वोट दिया है उनसे जरूर पूछे की क्या गरीब इनको वोट के समय याद आते हैं।

यात्रा आमंत्रण

परामर्श संपादक

मो. इस्माईल

लॉकडाउन में तनावग्रस्त भारत

साल 2020 पूरी दुनिया पर भारी रहा लेकिन भारत के लिए कुछ खास रहा. एक तरफ केन्द्र और राज्य सरकारें कोरोना का रोना रोती नजर आई तो दूसरी तरफ देश की जनता अचानक के लॉकडाउन से तनाव में आ गई. 25 मार्च से लागू हुए देशव्यापी लॉकडाउन से जिंदगी अचानक रुक सी गई. देश व्यापी लॉकडाउन को संभालने के लिए देश तैयार नहीं था. एक तरह छात्र भी इन बदलावों के लिए मानसिक रूप से तैयार नहीं थे. अचानक परीक्षाएं स्थगित होने और क्लास ऑनलाइन शिफ्ट होने से छात्रों में अनिश्चिताएं बढ़ गई.

लॉकडाउन के दौरान कोरोना वायरस से जितने लोगों की जिंदगी बचाई गई, उससे कई ज्यादा ईलाज के अभाव में लोगों की मौत इस दौरान टीबी और हैजा जैसी बीमारियों की अनदेखी के कारण हुई है। लॉकडाउन में एक तरफ कारोबर के बंद होने से बेरोजगारी, भूखमरी, गरीबी की मार से जनता परेशान थी दूसरी तरफ सरकारी तंत्र ने जनता पर सामाजिक दूरी और के नाम पर जमकर जुल्म किया गया.

आज लॉकडाउन 2020 को याद नहीं करना है लेकिन क्यूंकि यह बहुत भयावह रहा है और केन्द्र सरकार ने जिस तरह इसे लिया है वह बयान करने के लायक नहीं है. सरकारों के मीडिया तंत्र यानि गोदी मीडिया के माध्यम से एक संस्था जो एक ग्रुप को केन्द्रित करके खूब भुनाया गया, लॉकडाउन में लूट का कारोबार खूब हुआ है. लॉकडाउन में जो पलायन हुआ उसको देश कभी नहीं भूल सकता, भूखमरी, गरीबी और बेरोजगारी के कारण परिवार के परिवार समाप्त हो गए. लॉकडाउन और कोरोना किसी की समझ के बाहर था. ऐसा लग रहा था मानो यह एक प्रोपागंडा हो, बेवजह का अन्तर्राष्ट्रीय ड्रामा या साजिश हो.

अंत में निचोड़ के तौर यह कह सकते हैं कि सरकारों ने साल 2020 को जनता के लिए काला पानी की सजा का रखा था.

यात्रा की अमानवीय त्रासदी

dainikbhaskar.com इंदौर, शनिवार 16 मई , 2020

तपती सड़कें, नन्हे पांव और मीलों का दर्दनाक सफर

अधूरे सपनों की घर वापसी

बेबसी में भूख से लड़ते हुए लौट रहे हैं मजदूर

लाखों मजदूरों का पलायन जारी है। भूख से लड़ते हुए तपती सड़कों पर मीलों पैदल सफर पर निकले मजदूरों, बच्चों और महिलाओं पर पढ़िए 10 राज्यों से **भास्कर ग्राउंड रिपोर्ट्स...**

चंडीगढ़ | 10 साल की इस बच्ची के न पैरों में चप्पल है, न सिर पर छांव। यह परिवार के साथ सैंडिल पहनकर चली थी। रास्ते में सैंडिल टूट गए तो उन्हें फेंकना पड़ा। उसके बाद तपती दुपहरी में आग उगलती सड़क पर नंगे पांव ही चल पड़ी। इन्हें उत्तरप्रदेश के उन्नाव जाना है। **फोटोः जसविंदर सिंह**

देश को तालाबंदी तो दे दी गयी पर तालाबंदी उन कदमों को न दी जा सकी जो सफर अपने हौसलों से करते है। क्या ट्रेनों के पहिये थाम लेने से, बस की सुविधा से महरूम करने से , सड़क पर वाहन रोक देने से क्या आप देश के मजदूरों को रोक सकते है। माना की देश हजारो किलो मीटर में फैला है और लोग सौ साल पीछे की जिन्दगी नहीं है जब महीनों पैदल ही सफर आम बात थी। पर ऐसा भी नहीं है गरीब इसलिए रुक जायेगा क्यूंकी यातायात बंद है। गरीब की भूख का सही आकलन सरकार नहीं कर पाई और लाखो लोग विस्थापितों की तरह अपने पैरो के सहारे ही अपने गांव निकल पड़े। सत्ता के गलियारों में जिन्हें गुरुर था की हम गरीब का हौसला तोड़ देंगे वह अपने सोच को वापस दुरुस्त कर ले। क्यूंकी सड़क पर तो हिन्दुस्तान की गरीब जनता नहीं वह वोटर था जो यह समझ ही नहीं पा रहा था को उस से गुनाह कहा हुआ। और सड़क पर उन कदमो को क्या कहेंगे जो अभी ठीक से चलना भी नहीं सीखा था। क्या हम में से कोई भी इतना निर्दय हो सकता है की किसी के आंसू को इसलिए अनदेखा कर दे क्यूंकी महामारी के आड़ में विश्व स्वास्थ्य संघटन के इशारो पर चलना है। क्यूंकी हम इस अंक में उन अमानवीय यात्रा के पल साँझा कर रहे है जो इतिहास भरे मन से याद रखेंगे।

मान कुमारी को पता नहीं और कितनो को याद होगा जब उसने अपने पति और चार नवजात बच्चो के साथ अम्बाला से अपने गाओ मध्य प्रदेश के लिए निकली। 150 किलोमीटर के बाद अम्बाला में उसने सड़क पर अपने बच्चे को जनम दिया। भारत की नारी की ऐसी कहानी पहली बार सुनी और देखी गयी। हम जब कोरोना के नाम स्वास्थ्य सुविधा का ढोल पीट रहे थे तब माँ सड़क पर अपने

बच्चों को जनम दे रही थी। मान कुमारी ने बच्चे को जनम दिया और वापस पैदल अपने घर की तरफ निकल पड़ी। 1200 किलो मीटर के इस सफर में न कोई डॉक्टर मिला न कोई और सहायता। और उस पिता को भी याद करे जो रामपुर के लिया निकला और रस्ते में उसके चार साल के बच्चे की मौत हो गयी। अम्बाला से पीलीभीत के इस यात्रा में अपने लाल के मौत को सिर्फ इसलिए छुपाये रखा ताकि उसे quarantine न कर दिया जाये। जलना से मध्य प्रदेश जा रहे 16 प्रवासी मजदूर की मौत रेल के निचे आने से हो गयी। जिस ट्रैन को बंद करके सोचा जा रहा था की लोग सफर कैसे करेंगे, वही ट्रैन इन अभागो के लिए जिन्दगी का आखरी सफर साबित हुआ। मुंबई मिर्रोर की कवर स्टोरी में इस घटना का जिक्र करते हुए लिखे की आज आज हमारे पास शब्दों की कमी हो गयी है। देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में सफर नाली के रस्ते करते पाए गए प्रवासी मजदूर। मुलुंड टोल नाके के सामने के नाले में यह जानलेवा यात्रा कई दिनों तक चलता रहा और किसी ने इनकी सुध तक नहीं ली। और यह सब इसलिए ताकि पुलिस की नजर से बचा जा सके।

तेलंगाना के वर्गाल में कुए में 9 प्रवासी मजदूर जिनमे महिला और बच्चे थे , दो बिहार और 7 पश्चिम बंगाल के थे , जिनके शव पाए गए। बताया गया की यह पुलिस से बचने की कोशिश में मौत के गले लग गए। यह सभी मजदूर कोल्ड स्टोरेज में काम करते थे। सरकार के पास कोई पुख्ता जानकारी नहीं पर तकरीबन 676 मजदूर मारे गए।

हम पता नहीं किस भारत पर सीना चौड़ा करते है। और जब श्रमिक एक्सप्रेस ट्रेनों की आवाजाही शुरू हुई तो 28 घंटे का सफर चार दिन में पूरा होने लगा। कुछ ट्रैन तो अपने तय रस्ते से भटक गयी। रेलवे की माने तो 40 ट्रैन अपने रस्ते से भटक गयी। मुंबई से चली ट्रैन गोरखपुर की जगह राउकीला और बेंगलोर से बस्ती की ट्रैन गाजियाबाद पहुंच गयी। और जो सबसे दुखद बात रही की यह रेल सफर 95 प्रवासी मजदूरों के लिए आखरी सफर साबित हुआ। इसमें से उस शिशु की कौन भुला सकता है जो अपने ही जननी कफन के साथ खेलता दिखाई दिया।

घर वापसी की बेहद दुखद और तकलीफ देने वाली वेदनाओ से भरी इस यात्रा के लिए शायद ऐसे 10 अंक भी कम पड़ेंगे। पर जरूरी यह नहीं की हम कितना लिखे और आप कितना पढ़ें, जरूरी यह की हम कितना याद रखें। अगर हम याद रखेंगे तो यकीन मानिये इन प्रवासी मजदूरो के पक्ष में एक कदम आपकी मानी जाएगी। इसके बाद पूछना आपको हुकमरानो से जब वह आपके दरवाजे वोट मांगने आये। किसी और देश की ऐसी घटना होती तो दो चार लोग सत्ता के गलियारों में बैठ के ही संवेदना जताते, क्यूंकी जो तकलीफ में थे वह हमारा परिवार ही है, शायद कुछ इस्तीफे भी नैतिकता पर आ भी जाते। पर यह नया भारत है। यहाँ कुर्सी मिलनी चाहिए। उसके बाद उसी कुर्सी के पैरो तले कौन पीस रहा है, कौन परेशान हो रहा है , यह सब देखने की फुर्सत फिर किसी को नहीं है। इसलिए पहले देश का मजदूर जो सबसे गरीब वर्ग से आता है वह अपने पेट की खातिर सड़क पर आया। अब किसान अपने मांगो के साथ है , इस बिच बेरोजगारी ने माध्यम वर्ग को घर बैठे बैठे ही सड़क पर ला दिया है।

अभी इतिहास लिखा जा रहा है और दस साल बाद जब विभाजन के बाद की सबसे बड़े पलायन के इस यात्रा को याद किया जायेगा तो यकीं मानिये किसी के लिए कुछ भी सुखद नहीं रहेगा। न चार घंटे में lockdown का निर्णय, न थाली बजाना, न दिया जलाना, न फूल बरसाना और न महामारी के आड़ में मजदूरो को रोकना।

यात्रा आमंत्रण

पुणे से बीमार मां को गोद में लिए बनारस होते हुए बिहार जा रहा एक प्रवासी

स्त्री मुक्ति आंदोलन के पैरोकार कितनी लम्बी निद्रा में

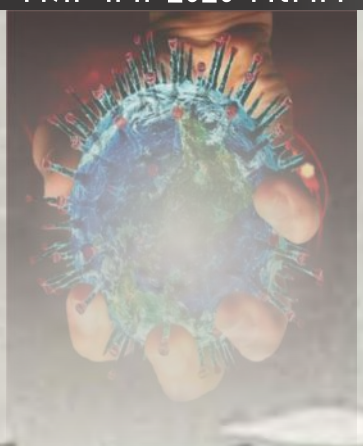

बाल कल्याण मंत्रालय की आखिर नैतिक जिम्मेदारी क्या है, सवाल इसलिए पूछे जा रहे है क्यूंकी जब सड़क पर नवजात पैदा हो रहे थे या फिर नदाप माओ को चिकित्सा सुविधा की जरूरत थी तब चुनाव के समय बरसाती मेडक की तरह टर तर करने वाले मंत्री संत्री कहा विलुप्त थे, जब रेलवे स्टेशन पर माँ अपनी आखरी सासे ले रही थी और एक शिशु इस का गवाह बन रहा था तब कौन सा मानव उनकी बात करने वाले घड़ियाली असू की अश्व धरा बहाने वाले कहा थे, जब शिशु को लेकर 1000 किलोमीटर की पद यात्रा पर निकली भारत की महान नारी अपने दरिद्रता को अपने अचल में छिपाये अपने मंजिल की और प्रस्थान कर रही थी तब महिला आयोग के नाम पर मलाई चाटने वाले की आला अधिकारी कहां थी,

वंचितों, शोषितो, पीड़ितों, उत्पीड़न की शिकार महिलाओ के नाम पर लाखो दुकाने खुले हुए है और ऐसा लगता है जैसे भारत की नारी का सारा दुःख यही लोग हर लेंगे, पर दरसअल यह सब संघटन नाम मात्र के है, इनकी दुकान सिर्फ फलसफों की बात कहने और उस पर रोटियां सेकने पर जा रही है, व्यवहार में चाहे सरकारी हो या गैर सरकारी इनकी कार्यप्रणाली हमेशा संदेह के घेरे में रही है.

तालाबंदी के मौके पर महिला कल्याण मत्रालय अपनी कुंभकर्णी नीद में थी और राहुल गांधी को हराने वाले झाँसी की रानी को शायद ही किसी ने देखा होगा. सड़क पर राज्य महिला आयोग तो ऐसे नदारत थे जैसे गधे के सर से सींग.

पुलिस वाकई शूरवीरो की तरह काम कर थे, जो दिखे सड़क पर बस उन्हें हकलाते रहो, ऐसा तो अमेरिका में नीग्रो को जब गुलामो की तरह रखा जाता था तब भी नहीं हुआ, आखिर देश का गरीब देश का दुश्मन क्यों हो गया.

यात्रा आमंत्रण

Deaths due to Lockdown

as of 30 May 2020

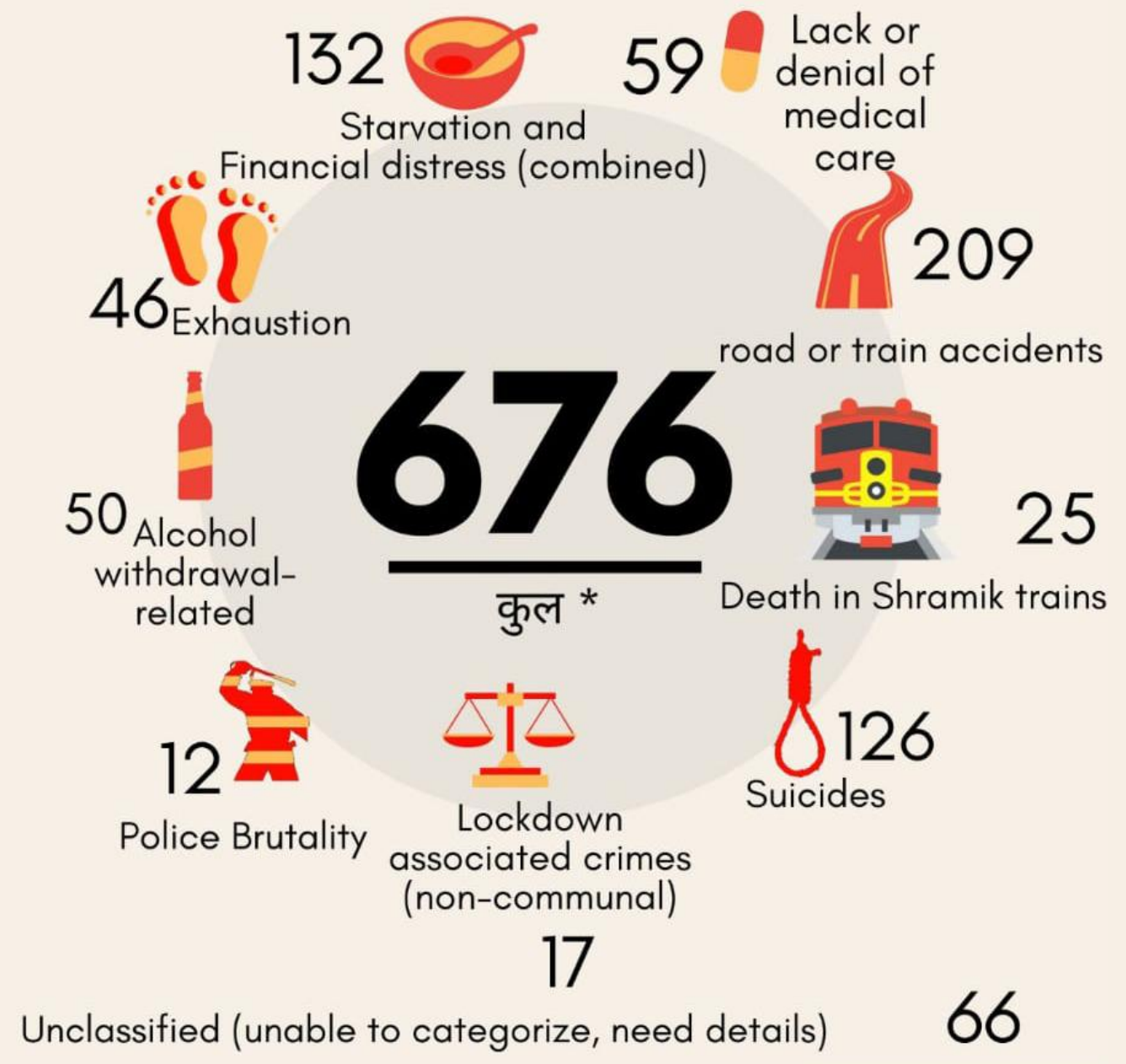

***Total including Unclassified 742**

full dataset: https://thejeshgn.com/projects/covid19-india/non-virus-deaths/

queries: trackinglockdowndeaths@gmail.com

This is a family of migrant worker. They r walking on the Mumbai Nasik Highway along with their belongings. So next time when you think to give up your pet whom you "loved like your own child" just remember this pic

नारी सम्मान की बात केहनी वाली सरकार नारी विरोध की बानगी भर क्यों रह गया, क्यों सभ्य समाज के पैरोकार अपने घर से बाहर इन महिला मजदूरों की वेदना नहीं सुन पाए,

तालाबंदी ने कई चेहरों को बेनकाब किया और कई संस्थाओ के होने पर सवाल खड़ा किया. आखिर महिलाओ के नाम पर चलाये जा रहे इन संस्थाओं की क्या आवश्यकता है जब अवं सड़क पर दम तोड़ रहे हो और मोहतरमा वातानुकूलित कक्ष में बैठ के गोदी मीडिया के झूठे फरेब को चटकारे लेकर देख रही हो. भारत स्त्रियों के सुरक्षा और समाज में भागीदारी को लेकर काफी पीछे है, 50 प्रतिशत की यह आबादी न तो पूर्ण रूप से शिक्षित है और अपने अधिकारों को लेकर जागरूक।

आज भी लड़कियों के जनम पर उतना स्वागत का शोर सुनाई नहीं पड़ता है जितना पड़ना चाहिए. यहाँ तक की स्त्रियों के आज भी बच्चा पैदा करने बड़ा करने नाम के काम पर लगाया जाता है. हलाकि गरीब परिवार में पैसों की कमी के कारन पुरुष और स्त्री दोनों ही मजदूरी करते है और दो वक्त की रोटी का.

भारत में गरीब आज भी वैश्विक गुलामी के पदचिन्हों पर चल रहा है उसके लिए इसे सहने के आलावा कोई और वैकल्पिक मार्ग शेष नहीं दिखता है. तो तालाबंदी में माताओ और शिशु की जो दुर्गति हुई उस से कुछ प्रश्न खड़े होते है जिसका जवाब या तो हुकमरान दे या देश के नागरिक.

प्रश्न पहला : महिला बाल कल्याण की क्या उपयोगिता है.

प्रश्न दूसरा : लाखों माताओं और शिशु की वेदना को अनसुना करने पर किसी को कटघरे में क्यों खड़ा नहीं किया गया है.

प्रश्न तीसरा : जब सड़क गरीब महिला श्रमिक अपने जीविका के लिए संघर्ष कर रही थी तब कोई सरकारी रहत इन तक क्यों नहीं पहुंचे गयी.

हमारा सुझाव : श्रमिक ट्रैन में महिला और बच्चों को पहले प्राथमिकता चाहिए था और इनके लिए विशेष प्रभंध करना चाहिए था तो समाज में औरतो के पैरोकार बनने वाले मसीहाओं से जब भी साक्षात्कर हो पहली फुरसत में यह प्रश्न अवश्य पूछ लीजिये की अवसरवाद के इस खेल में औरतों की हक की बात राजनीती है, दिखावा है या अपने हिस्से की विभीषिका की संतुष्टि मात्र है क्यूंकी तालाबंदी से उपजे महिलाओं के वेदना में कोई एक आवाज इनके पक्ष में न सुनाई दिए न सुनने की कोई बात रही.

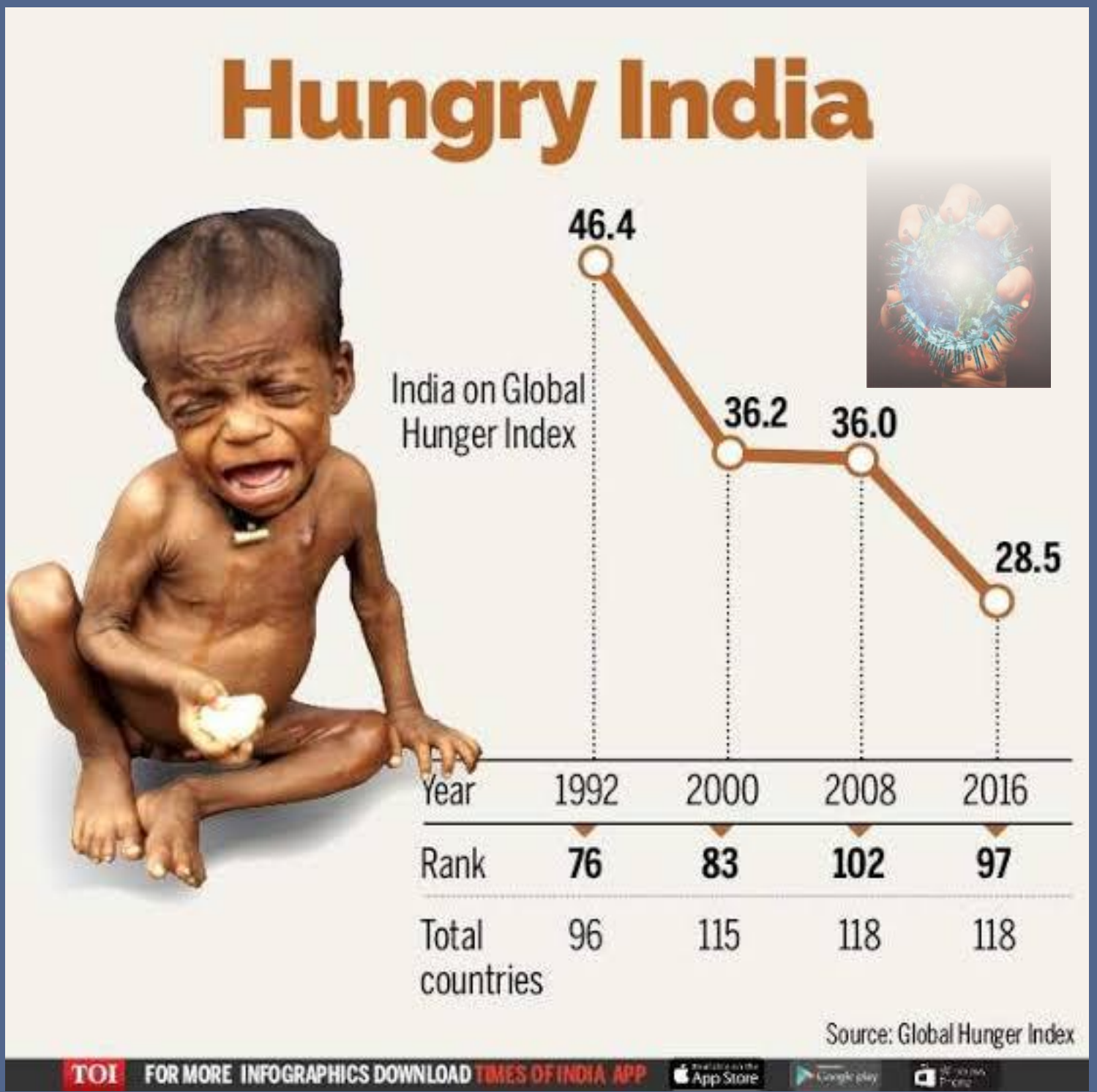

भूख और गरीबी से बड़ी महामारी क्या?

भारत में गरीबी, भुखमरी और दो वक्त की रोटी की जदो जहद कितना भयावह है, इसको समझने के लिए कुछ आकड़ों पर गौर करना आवश्यक है। क्यूंकी चार घंटे में तालाबंदी जितना आसान था उतना आसान उन आकड़ों को नजरअंदाज करना नहीं था जो बताता है की आजादी के बाद गरीबों के कुछ खास बदलाव आये नहीं है। हम कह तो देते है चार घंटे के बाद कोई घर से बहार नहीं निकलेगा पर जो सबसे बड़ी बीमारी यानि गरीबी और भूख से लड़ रहा हो, वह कोरोना से क्या डरेगा, देखा जाये तो एक गरीब जैसे अपने जिन्दगी की लड़ाई लड़ता है वह भी एक किसम का यौद्धा ही है। जब जिम्मेदारी हो और जेब खाली, तब आसान नहीं की आप कुछ भी संभल ले। जिन्हें कोरोना डरा रहा और जो lockdown को विकलप के रूप में देख रहे थे उन्हें गरीब बस्तिओं से होकर आना चाहिए था। वह पर आपको कोरोना से हजार गुना बड़ा महामारी दिख जाती। वह पर गरीबी से दो गज की दूरी का पालन पूरी जिन्दगी होता है और लगातार चलता रहता है। वह पर रोटी ही मास्क है और उसी से सास को चलाये रखा जाता है। और भुखमरी ऐसी की हाथ धोने से पहले जिन्दगी से हाथ धो लिया जाता है। इसलिए हुकमरान राजनीती करते रहे और हम बताते रहे की १२५ करोड़ की आबादी के पेट में कितनी भूख है। आकड़ें कुछ इस प्रकार से है।

भारत में 1.77 मिलियन लोग बेघर है। यह वह लोग है जिनके पास घर नहीं है और सड़क ही जिनके लिए घर है। Lockdown में घर से बाहर निकलने की मनाही थी पर जो हमेशा बाहर ही रहे और जिनका घर फूटपाथ है, उनको कहा बंद किया जा सकता है, काश यह भी बता दिया जाता।

सुरेश तेंदुलकर रिपोर्ट जो 2009 में जारी हुआ, उसमे बताया गया की तकरीबन 29 प्रतिशत आबादी जो संख्या में 354 मिलियन है, गरीबी रेखा के निचे है। और आज भी इन आकड़ों में कोई फरक आया नहीं। जिस देश में 29 प्रतिशत लोगो ठीक से अपने पेट के लिए रोटी नहीं जुटा पते है वह पर यह कह दिया जाये की कोई घर से नहीं निकलेगा। कह तो दिया पर शायद दैनिक मजदूर नहीं रुके क्युकी पेट को रोटी चाहिए। कोरोना तो इनके लिए मसला ही नहीं था।

और जब चिकित्सा सेवा की बात कोरोना की उंगली थामे की जा रही है तो आपको मालूम होना चाहिए, की देश में कितने लोगो तक मेडिकल की सुविधा पहुँचती ही नहीं है। तकरीबन 510 मिलियन नागरिक दवाई या मेडिकल सेवा से वंचित रह जाते है। वैसे देश में हम है।

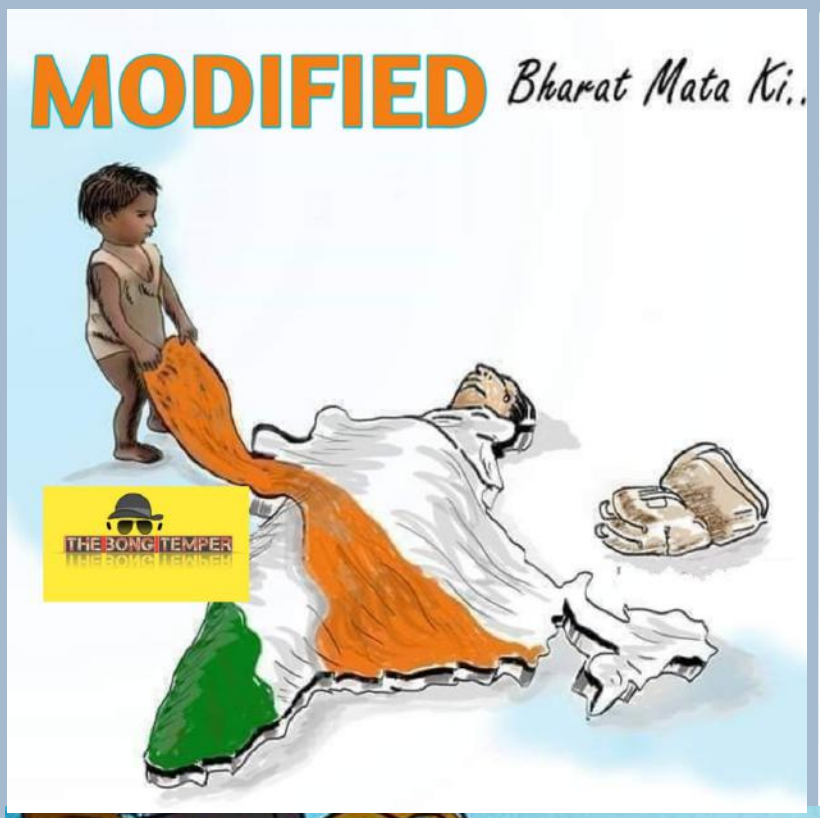

बेलारूस president, Alexander Lukanshenso ने कहा की कोरोना से ज्यादा मौते भूखमरी और गरीबी से होगी।

तो क्या हम गरीब को गरीब नहीं मानना चाह रहे है या फिर उनकी जरूरत सिर्फ चुनावी रैली और वोट के समय है। जिन्हे लगता है की lockdown में मुफ्त में आनाज दिया गया उनसे भी प्रश्न है की क्या 5 किलो चावल ही काफी है। उसे पका के क्या नमक के साथ खायें और पकाये किस्मे। गैस या लकड़ी या केरोसिन, और कौन देगा उसका पैसा। और घर में बिजली और माकन का किराया वह कौन देगा। अभी तो मैं गरीब पर ही हु, अगर माध्यम वर्ग के घर झाकने चला गया तो यकीं मानिये आर्टिकल अनगिनत शब्दों में फैलने लगेगा। इसलिए गरीबी पर जब देश खड़ा हो तो उसे वह से आगे एक और गरीबी थोप के नहीं बढ़ाया जा सकता है। समझेंगे तो जो मजदूर आपके लिए है वह आपके लिए हमेशा रहेगा।

RNI Reg No. : HARHIN/2017/72144

इजारा

महिलाओं द्वारा संचालित भोजनालय

आज किसके साथ TRY किया

खजूर की चटनी

गुड़ और इमली के साथ

100% Natural products

Try this chutney with Samosa, Kachori, Bread Pakoda, Paratha, Dal Rice and Bhel etc.
Also use this as an alternate of achar/Sauce/Jam

DATES CHUTNEY WITH JAGGERY

MARKETED BY
IJAARA FOODS
B 121, Green Field Colony Faridabad, Haryana 121001
Follow us @ijaarafoods

For Bulk Purchasing / Distribution
+91 99712 29644
ijaarafood@gmail.com
www.willindiachange.org

WILL INDIA CHANGE FOUNDATION

A NGO Initiative to empower women